

2009
परीक्षा के प्रश्नों
की सील

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्य प्रदेश, भोपाल मु.पु. 24 पृष्ठ
कार्यालय के उपयोग के लिए
निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।



हई स्कूल की सील

1. विषय कोड 200 परीक्षा का विषय विज्ञान
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 17-03-09

केन्द्र क्रमांक की सील
केन्द्र क्रमांक 221000

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर कोड सेट
(सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः करें T-1034 C
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण
प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक
उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में X अंकों में X
ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष
क्रमांक 8A में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट
सही लिखा है।

B
S
E
M
P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) [Signature]

नाम SK Sultana पद AT

पता/संस्था CG H SC - Nowrang

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य
उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

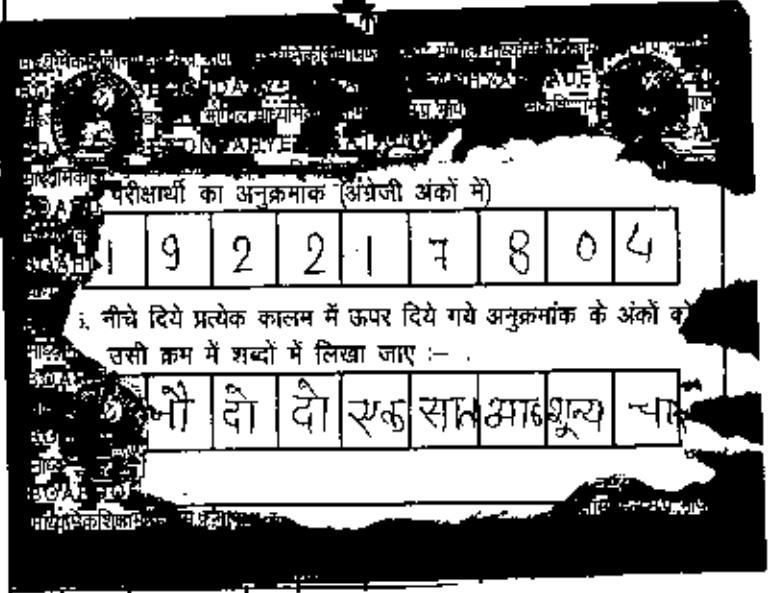
परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है
कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये
निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित
करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका
वस्था स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर
पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक सम्मन है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) [Signature]
परीक्षक क्रमांक 951065

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) [Signature]
दिनांक 22/3/09

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)
दिनांक.....



परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छ	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 3 के अंक

कुल अंक



रवण्ड - अ

उत्तर

प्रश्न (अ)

उत्तर

(1) ~~शनि ग्रह~~

(II) ~~निहारिका~~

(III) ~~जोनियन ग्रह~~

(IV) ~~76 वर्ष~~

(V) ~~क्रोड~~

(ब) उत्तर

अ

(1) लाल रक्त कणिकाएँ

(2) जाइलम

(3) न्यूरोन

(4) इन्सुलिन

(5) ऐल्युमिनियम

ब

(4) ऑक्सीजन का वाहक

(3) पौधों में पानी का परिवहन

(4) तंत्रिका तंत्र की इकाई

(5) भ्रूणनाशक

(2) बॉक्साइट

B
S
E
M
P



B
S
E
M
P

प्रश्न:- उत्तर

(अ)

(i) - (d) वक्रता केन्द्र पर

(ii) - (b) वोल्टमीटर

(iii) - (c) यकृत

(iv) - (b) 38 ATP

(v) - (v) पीतल

(ब) उत्तर

(i) - (उल्लासोमी अभिन्निय)

(ii) - $\text{Na}_2\text{CO}_3 \cdot 10\text{H}_2\text{O}$

(iii) - रक्तगोलीय दूरदर्शी या आकाशीय दूरदर्शी

(iv) - विद्युत जनित्र (डी.सी.)

(v) - सोडियम

6

या



प्रश्न 4 का उत्तर

उत्तर :- श्वसन और श्वासोच्छ्वास :-

श्वसन और श्वासोच्छ्वास में प्रमुख निम्न अंतर हैं।

श्वसन :- (1) श्वसन एक जैव रासायनिक क्रिया है।

(2) इसमें गैरज्य पदार्थों का पूर्ण ऑक्सीकरण होता है।

(3) इसमें अभिक्रिया से ऊर्जा निकलती है जो ATP के रूप में संचित रहती है।

(4) यह क्रिया कोशिका के अंदर होती है।

(5) इस क्रिया में प्रकीर्ण पाये जाते हैं।

श्वासोच्छ्वास :- (1) यह एक यांत्रिक क्रिया है।

(2) इसमें O_2 युक्त वायु अन्दर व CO_2 युक्त वायु बाहर की जाती है।

(3) इस अभिक्रिया में ऊर्जा नहीं निकलती है।

(4) इस क्रिया में प्रकीर्ण पाये जाते हैं।

(5) इस क्रिया कोशिका के बाहर होती है।

यही श्वसन व श्वासोच्छ्वास में प्रमुख अंतर हैं।

B
S
E
M
P

ଉତ୍ତରୀୟ ଓ ପୂର୍ବୀୟ ଉପାଦାନ

ଉପାଦାନ ପୂର୍ଣ୍ଣ

ଉପାଦାନ - ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ - ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୧)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୨)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୩)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୪)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୧) - ଉପାଦାନ

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୧)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୨)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୩)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୪)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୫)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୬)

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ (୧) - ଉପାଦାନ

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ - ଉପାଦାନ

ଉପାଦାନ ଉପାଦାନ



B
S
E
M
P



P
M
E
S
B

ପଞ୍ଜୀକୃତ କର୍ମ ସମ୍ପର୍କରେ ସୂଚନା ପାଇଁ ଏହି ପୃଷ୍ଠା
ପୃଷ୍ଠା ୨୫-୩୦ ରେ ଦେଖନ୍ତୁ।

ପଞ୍ଜୀକୃତ କର୍ମ ସମ୍ପର୍କରେ ସୂଚନା ପାଇଁ ଏହି ପୃଷ୍ଠା
ପୃଷ୍ଠା ୨୫-୩୦ ରେ ଦେଖନ୍ତୁ।

ପଞ୍ଜୀକୃତ କର୍ମ ସମ୍ପର୍କରେ ସୂଚନା ପାଇଁ ଏହି ପୃଷ୍ଠା
ପୃଷ୍ଠା ୨୫-୩୦ ରେ ଦେଖନ୍ତୁ।

ପଞ୍ଜୀକୃତ କର୍ମ ସମ୍ପର୍କରେ ସୂଚନା ପାଇଁ ଏହି ପୃଷ୍ଠା
ପୃଷ୍ଠା ୨୫-୩୦ ରେ ଦେଖନ୍ତୁ।

ପଞ୍ଜୀକୃତ କର୍ମ ସମ୍ପର୍କରେ ସୂଚନା ପାଇଁ ଏହି ପୃଷ୍ଠା
ପୃଷ୍ଠା ୨୫-୩୦ ରେ ଦେଖନ୍ତୁ।

୨୦୬ ଓ ୨୦୮

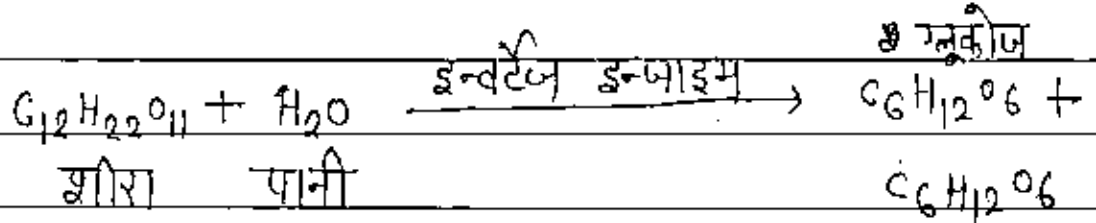


ପଞ୍ଜୀକୃତ କର୍ମ ସମ୍ପର୍କରେ ସୂଚନା ପାଇଁ ଏହି ପୃଷ୍ଠା
ପୃଷ୍ଠା ୨୫-୩୦ ରେ ଦେଖନ୍ତୁ।

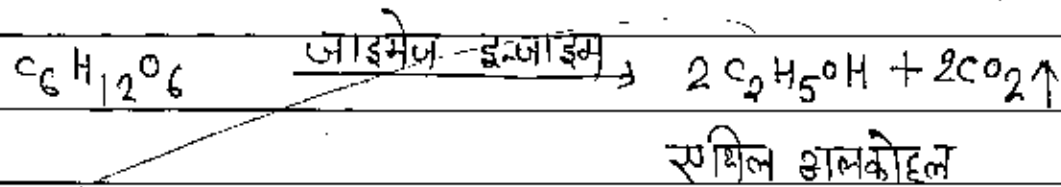


B
S
E
M
P

(1) शरीर में उपस्थित शर्करा क्रिस्टल इन्वर्टेज इन्जाइम की उपस्थिति में ग्लूकोज या फ्रक्टोज बनते हैं।



(2) ग्लूकोज तथा फ्रक्टोज जाइमेज इन्जाइम की उपस्थिति में स्थित ग्लाइसोल बनता है।

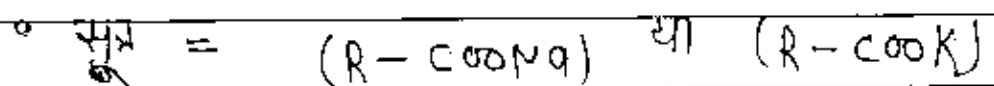


यही क्रिस्टल सक्रियता है।

प्रश्न का उत्तर

उत्तर :-

साबुन बनाने की विधि :- उच्च अणुभार वाला कार्बोऑक्सिलिक अम्ल के क्लोरीड या लवण के सोडियम या पोटेशियम लवण होते हैं। साबुन

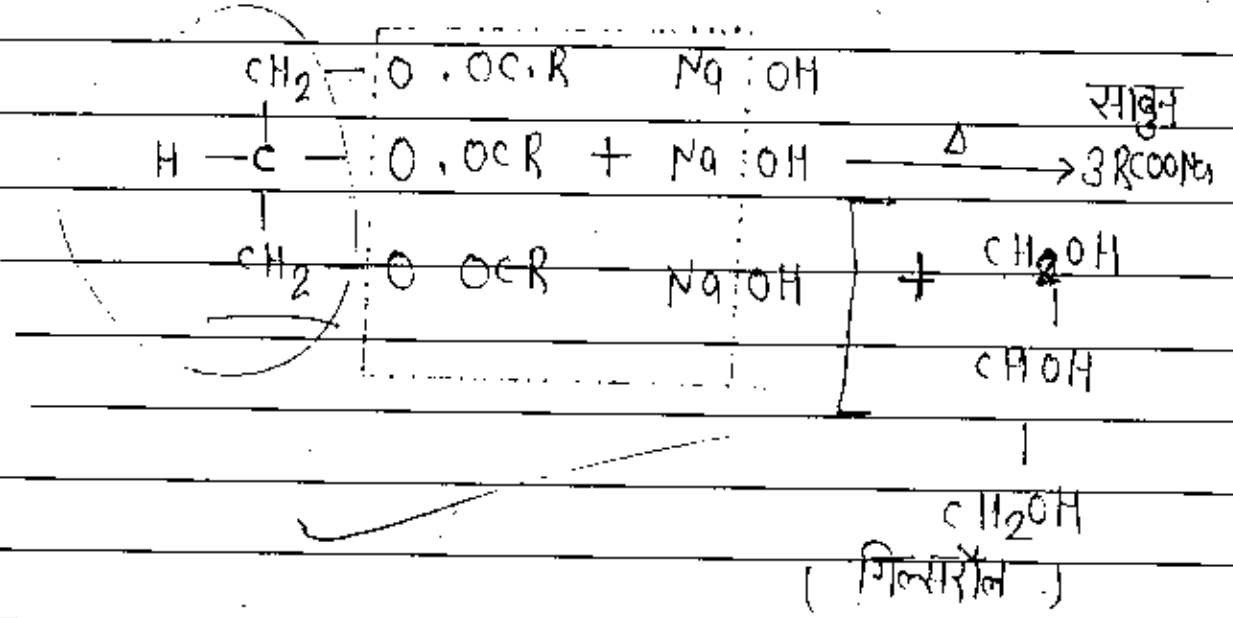


या $C_{17}H_{35}O$ या हाय स्फिलिक समूह है।



बनाने की विधि :-

साबुन को अणिकवात जन्तु वसा या वसीय तैलो से बनाया जाता है। यह वसीय या तैल (ये वसीय साम्ल के ग्लिसरॉल के बने सूस्टर) का शारीय जलीयकरण अपघटन द्वारा साबुन बनता है। तथा ग्लिसरॉल उपजात के रूप में प्राप्त होता है।



द्वारे द्वारा जलीय अपघटन से साबुन बनने की प्रिया साबुनीकरण कहलाती है।

प्रयोगशाला या घर में साबुन को बनाने के लिए विनीले का तैल, सोयाबीन तैल लेकर उसमें सान्द्र NaOH मिलाते हैं। तथा मिश्रण को क्विडित करते हैं। तथा तब तक गर्मी करते हैं जब तक क्विडित की लेई (lather) नहीं बन पाती है।

B
S
E
M
P

के

इस प्रकार साबुन प्राप्त करते हैं।

प्र० 8 का उत्तर

जल प्रदूषण को रोकने के उपाय :- जल प्रदूषण को रोकने या नियंत्रित करने के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं।

(1) औद्योगिक जल को पानी में डालने पर रोक :-

उद्योगों में औद्योगिक क्रियाओं के लिए जल का उपयोग किया जाता है। जिससे जल में विभिन्न प्रकार की गैसें मिल जाती हैं। जो पील नदी - तालाब के पानी को प्रदूषित कर देती हैं। अतः उद्योगों के जल को नदियों में नहीं डालना चाहिए।

(2) घरेलू कूड़ा - कचरा को भी नदियों में न मिलाकर जल प्रदूषण को रोक जा सकता है।

(3) हमें अपने मवेशियों को जल में नहीं गहलाना चाहिए। जिससे प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता है।

(4) जल में उद्योगों के जल को उपचारित कर कृषि में उपयोग में लाना चाहिए।



जिससे जल पर प्रदूषण की समस्या
हल हो जाती है।

इसके अतिरिक्त हमें ज्ञान विद्या,
एवं अन्य विद्याकलाओं जिससे जल - प्रदूषित
होता है को रोक कर जल - प्रदूषण
पर नियंत्रण किया जा सकता है।

प्रश्न का उत्तर

औषधियों पौधों के उपयोग :-

(1) तुलसी :- तुलसी एक वर्षीय शाकीय
या बहुवर्षीय पौधा है। यह भारत और
अफ्रीका में पाया जाता है। भारत के
हिन्दुओं द्वारा इस पौधे की पूजा की
जाती है।

उपयोग :- इसका उपयोग आभाशयिक रोग,
बवाँसी, उल्टीजक सर्वाण्डीय तथा सर्दी
जुकाम रोधी है। यह लकवा जोड़े के
वर्द तथा लकवा के रोगों में
उपयोगी है।

(ii) हल्दी :- हल्दी की जड़ औषधीय गुण
सुबत होती है।



औषधीय उपयोग :- इसका उपयोग हृदय रोग ,
 श्वाभाशयिक रोग तथा बसा को इर करने
 में उपयोग किया है यह सर्पी, जुकाम में
 उपयोगी है। तथा सूत्र-रोगों में उपयोगी है।

(iii) लहसुन :- यह क्षुभिगत कल्ब होता है।

उपयोग :- इसका उपयोग दुग्ध उत्तेजक स्थितियों में
 दुग्ध स्त्रावण पाचन एवं शक्तिसार को
 इर करने में भी उपयोग किया जाता है।

(iv) शशकगंधा :- शशकगंधा के मुख्य रस से
 सभी भाग औषधिय महत्व के होते हैं
 इसका उपयोग सर्पी, जुकाम, शक्तिसार, हृदय रोग
 आदि में किया जाता है।

यही औषधिय महत्व के पौधों के
 प्रमुख उपयोग हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

Short answer type Questions

पृष्ठ के का योग

14

या ग पूर्व पृष्ठ



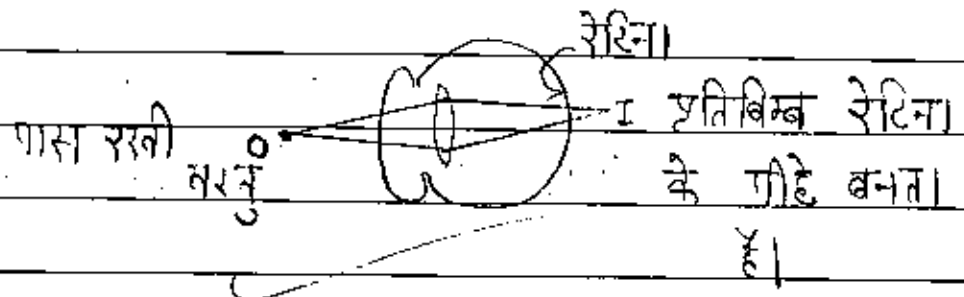
पृष्ठ 14 के अंक

कुल अंक



2010 का उत्तर

दूर दृष्टिदोष :- इस दोष से पीड़ित व्यक्ति दूर की वस्तुओं को स्पष्ट रूप से देख सकता है तथा पास की वस्तु सभी साफ़ नहीं देख सकता है। इस दोष को दूर-दृष्टि दोष कहते हैं।



दूर दृष्टि दोष के कारण :-

यह दोष निम्नलिखित में से किसी एक के कारण होता है।

(1) नेत्र से रेटिना तक की दूरी छार जाये।
अर्थात् नेत्र गोलों की मज्जा छार जाये।

(2) लेंस के पृष्ठों की नब्बता छार जाये।
अर्थात् लेंस या नेत्र पतला हो जाए।
अर्थात् उसकी फोकस दूरी बढ़ जाये।
तो यह दोष नेत्र में होता है।



पृष्ठ के अंकों का योग

B
S
E
M
P

15

योग

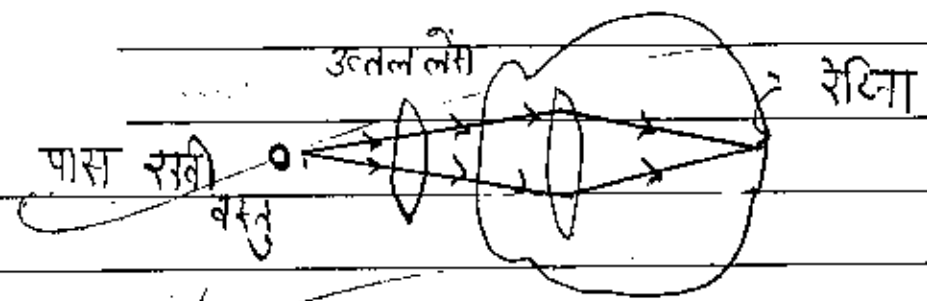
$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

पृष्ठ 15 के अंक

कुल अंक



दूरदृष्टि दोष का निवारण :- इस दोष में नेत्र की फोकस दूरी अधिक हो जाती है। अर्थात् नेत्र की अभिसारी क्षमता कम हो जाती है। अतः एक संज्ञा लेंस प्रयुक्त करना चाहिए। जो नेत्र की अभिसारी क्षमता को अधिक कर दे अतः उचित फोकस दूरी का उत्तल लेंस प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार दूरदृष्टि दोष का निवारण हो जाता है।



दूर दृष्टि दोष निवारण हेतु प्रयुक्त उपयुक्त लेंस

प्र० ॥ का उत्तर

नामिकीय संलयन व नामिकीय विखण्डन :-

नामिकीय संलयन व नामिकीय विखण्डन में प्रमुख अंतर निम्नलिखित हैं।

- (1) नामिकीय विखण्डन :- (1) इसमें आरी नामिकीय वोल्टेज नामिकीय में विभक्त हो जाता है।

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग



(2) यह सामान्य ताप पर सम्पन्न होती है

(3) यह विरवणनीय पदार्थ रेडियोधर्मी नहीं होते हैं।

(4) अनियंत्रित विरवणन अभिक्रिया के आधार पर परमाणु बम बनाये जाते हैं।

(5) इस विरवणन क्रिया में बने परमाणु बम हाइड्रोजन परमाणु की तुलना में कम विनाशकारी होते हैं।

नामिकीय संलयन :- (1) यह इसमें दो हल्के नामिक संयुक्त होकर भारी नामिक बनाते हैं

(2) यह अतिउच्च ताप पर सम्पन्न होती है।

(3) यह संलयनीय पदार्थ रेडियोधर्मी होते हैं।

(4) अनियंत्रित संलयन अभिक्रिया के आधार पर हाइड्रोजन बम बनाये जाते हैं।

(5) यह क्रिया इस क्रिया में बने हाइड्रोजन बम अधिक विनाशकारी होते हैं।

यही नामिकीय विरवणन व नामिकीय संलयन में प्रमुख अंतर है।

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

$$7 + \square =$$

पृष्ठ 17 के अंक

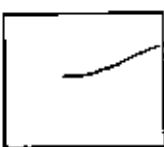


प्रश्न 2 का उत्तर

मनुष्य में लिंग निर्धारण :- मनुष्य की प्रत्येक कोशिका में 46 या 23 जोड़े गुणसूत्र पाये जाते हैं। जिसमें नर व मादा का 23 का गुणसूत्र असमान होता है। जबकि नर व मादा के 22 गुणसूत्र समान होते हैं जिन्हें आटोसम कहते हैं। 23 वां गुणसूत्र मादा का समान व नर का असमान होता है। यह "X" गुणसूत्र लम्बा तथा "Y" गुणसूत्र छोटा होता है। इस प्रकार नर में "XY" गुणसूत्र पाया जाता है। जबकि मादा में "XX" गुणसूत्र पाया जाता है। इस प्रकार यह 23 वां गुणसूत्र ही लिंग निर्धारण करता है।

शुरु (जनन) के फलस्वरूप नर के शुक्राणु में "X" व "Y" गुणसूत्र बनते हैं। जबकि मादा के अणुशय में एक ही समान गुणसूत्र पाया जाता है। यह ही मनुष्य में लिंग निर्धारण को नियंत्रित करता है।

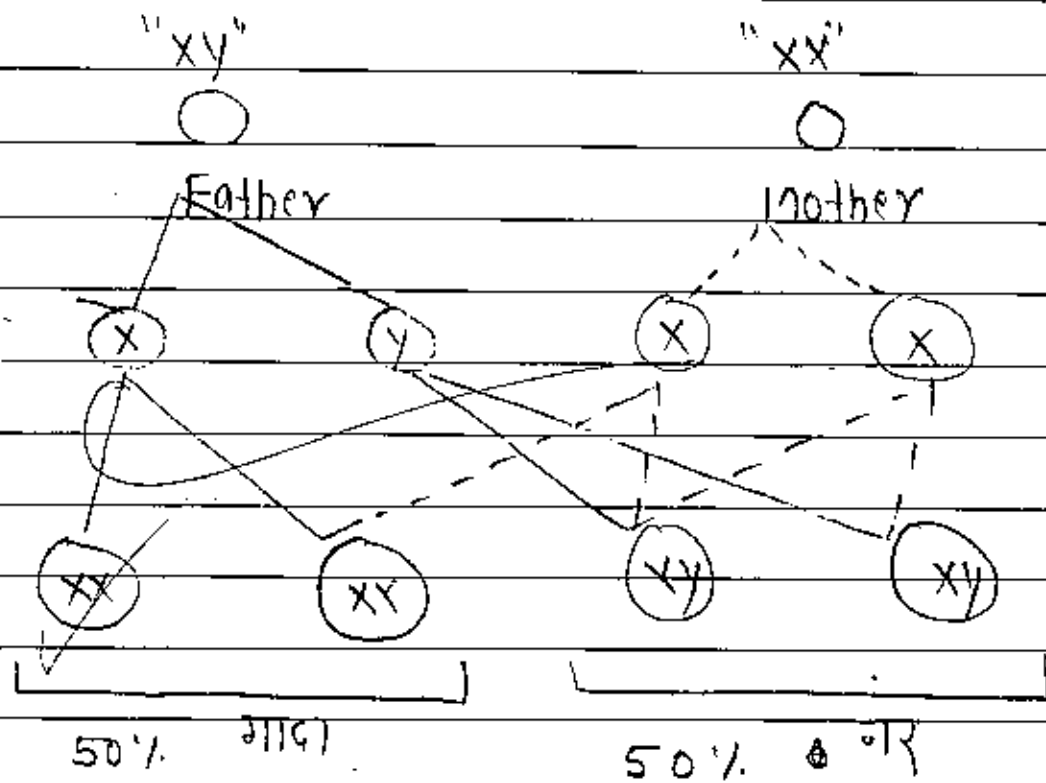
जब निषेचन के समय मनुष्य के शुक्राणु का "X" गुणसूत्र मादा के अणुशय के "X" गुणसूत्र से जाकर मिलता है। तब इससे सिद्ध होता है कि संतान





इसी होगी। तथा जब मनुष्य के शुक्राणु का "y" गुणसूत्र मादा के अण्डाणु के "x" गुणसूत्र से जाकर मिलता है। तब इससे सिद्ध होता है कि संतान ब्रह्म होगा। इस प्रकार इन गुणसूत्रों के आधार पर ही संतान की किस्म का पता लगाता है। इस प्रकार मनुष्य का "y" गुणसूत्र ज्यादा उत्तरदायी होता है। यही मनुष्य के लिंग निर्धारण की विधि है।

B
S
E
M
F



मनुष्य का लिंग निर्धारण का
रेखाचित्र

————— x —————

प्लॉट का उत्तर

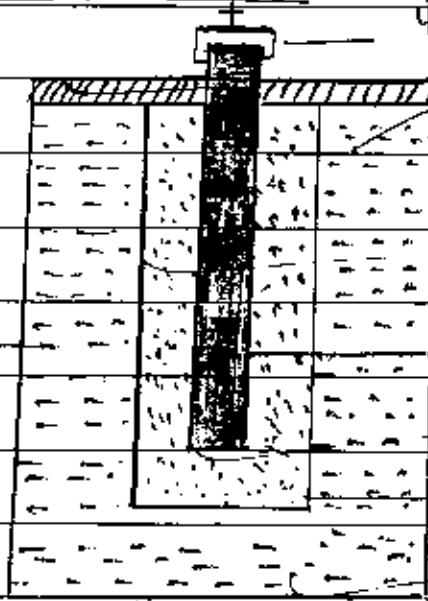
पीतल की टोपी

NH_4Cl व

लकड़ी का
बुराफा व

MnO_2 व

कार्बन युग्म



जस्ते का पात्र

कार्बन छड़

मलमल की

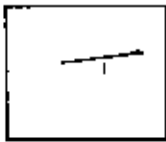
टोपी

शुष्क सेल

शुष्क सेल :-

शुष्क सेल में जस्ते के बेलनाकार पात्र के माध्य में कार्बन की छड़ होती है। कार्बन की छड़ के साथ अमोनियम क्लोराइड व कार्बन युग्म तथा मैंगनीज जर्स्ट ऑक्साइड को मिलाकर जस्ते के पात्र में रख दिया जाता है। तथा सेल का उपरी सिरा मोम से बंद कर देते हैं तथा इसमें कार्बन की छड़ एवं शुष्क $ZnSO_4$ व जस्ते का पात्र प्रवण शुष्क (कैथोड की) तरह कार्य करता है। तथा अमोनियम क्लोराइड व कार्बन युग्म विद्युत आपदाय की तरह कार्य करता है। तथा इसमें कार्बन की छड़ के द्वारा शुष्क पीतल की टोपी लगी जाती है।

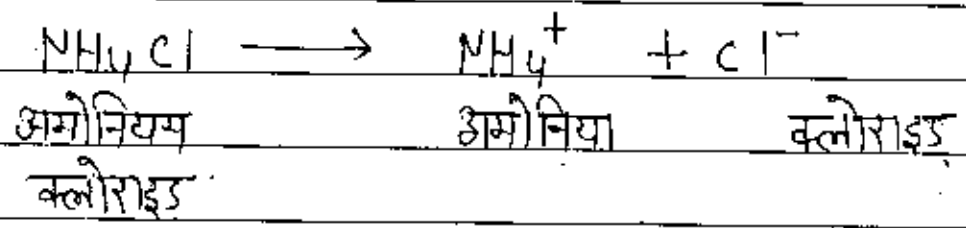
B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग



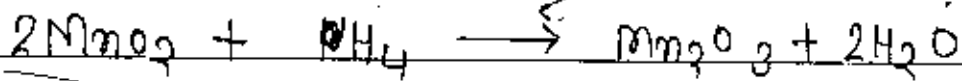
जब संयोजी तार द्वारा शुष्क सेल में धारा प्रवाहित की जाती है तो अमोनियम क्लोराइड व कार्बन विद्युत क्षपणक्य आँति कार्य करता है तथा क्लोराइड आयन (Cl⁻) जस्ते के पात्र पर तथा कार्बन की छड़ पर अमोनियम आयन (NH₄⁺) जाता है।



जब अमोनियम आयन से अमोनिया व हाइड्रोजन गैस प्राप्त होती है तो हाइड्रोजन गैस कार्बन की छड़ के चारों ओर एकत्रित हो जाती है जिससे माने वाले अमोनियम आयनों का छड़ से संपर्क टूट जाता है इस समस्या के निवारण के लिए सेल में मैंगनीज डाई ऑक्साइड का धुँषा धारा जाता है जो ऑक्सीजन से क्रिया कर पानी बनाता है तथा अमोनिया गैस प्राप्त होती है। अमोनिया गैस को बाहर निकालने के लिए सेल में सूखे बारीक क्लिप्त किया जाता है।

B
S
E
M
F

[
पृष्ठ के अंकों का योग



इस प्रकार शुद्ध सेल से 1.5 बोल्ट पर 0.05 एम्पियर धारा प्राप्त की जाती है।

प्रयोग का उद्देश्य
का तथा कोन व्याख्या

कोक चूना प्रतियोगिता

400°C

व्याख्या जैसे H₂ आदि



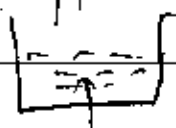
700°C

वायु सेतो

वायु

1600°C

पिघला लोहा



वातमूल

वाल्था भरी

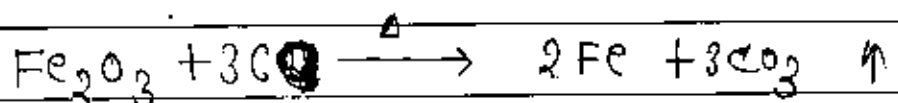
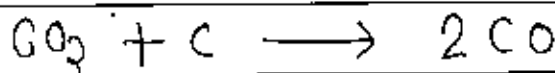
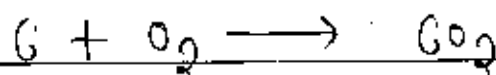
B
S
E
M
P



वाल्याभरटी में चुने का मिलाना :- वाल्याभरटी में चुने को मिलाने से सान्द्रित अयस्क बन जाता है जो लौहे अयस्क के सान्द्रण में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

सबसे पहले कप तथा कौन व्यवस्था से वाल्याभरटी में चुना पत्थर तथा कोक गिराया जाता है तथा इस अयस्क को सान्द्रित करके निस्तापित किया जाता है।

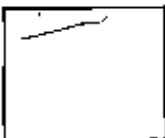
निस्तापन निस्तापित अयस्क में उपस्थित चुना पत्थर से हेमेटाइट से गलित प्रकार बनता है जो जिप्सो अयस्क लिए कठले ऑक्सीजन की आपूर्ति नहीं हो पाती है। और अंत में लगभग शुद्ध अयस्क प्राप्त होता है। और वाल्याभरटी में निम्नलिखित अभिक्रिया होती है।



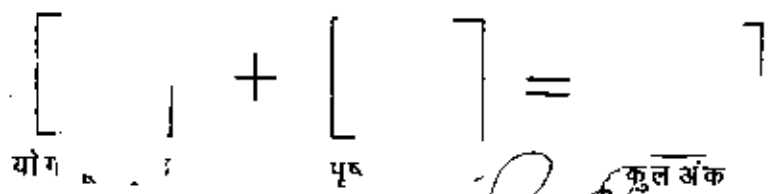
हेमेटाइट

लोहा

B
S
E
M
P



23



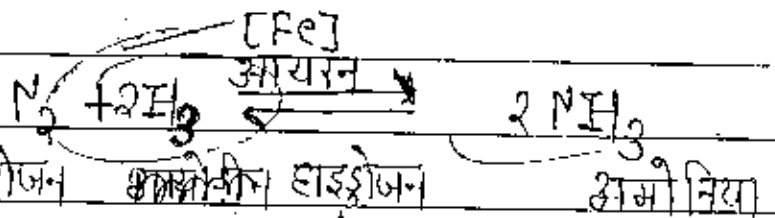
इस प्रकार शुद्ध लोहा ब्रमश:

99.2% शुद्ध होता है। तथा चूना पत्थर की उपस्थिति से यह क्रिया होती है।

उदाहरण

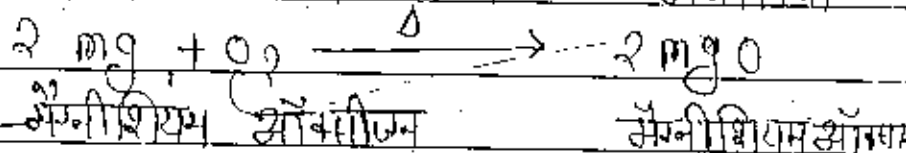
प्र०:- उत्तर

(1)

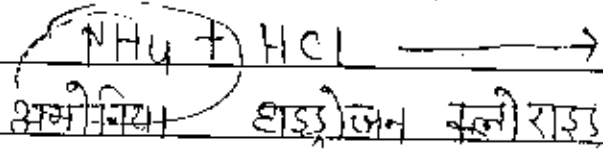


Ripit

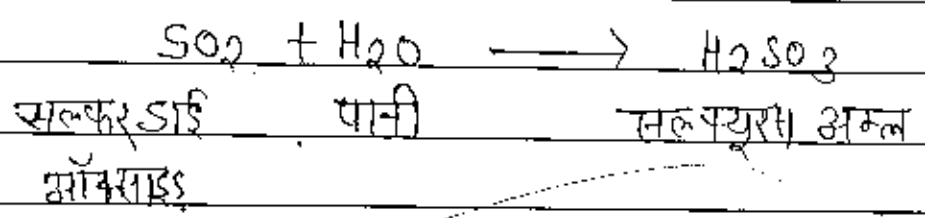
(2)



(3)



(4)



B
S
E
M
P

8

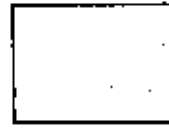
24



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग